Class Notes for students of B.A. Geography Hons. part – II, Paper – III, Unit – V

बिहार में कृषि आधारित उद्योग

Agro - based industries in Bihar

बोलेन्द्र कुमार अगम,
सहायक प्राध्यापक, भूगोल

बिहार का औद्योगिक भूदृश्य विविध प्रकार के औद्योगिक प्रतिष्ठानों की संरचनात्मक एवं क्रियात्मक विशेषताओं की स्थानिक अभिव्यक्ति का परिलक्षण माना जा सकता है । दूसरे शब्दों में, बिहार के उद्योग विविध प्रकार के हैं तथा इनका क्रियात्मक परिचालन सफलता और असफलता की कहानी प्रस्तुत करता है । बिहार में कई प्रकार के उद्योग मिलते हैं जिसमें प्रमुख है कृषि पर आधारित उद्योग ।

कृषि पर आधारित उद्योग

वर्तमान बिहार मूलतः कृषि प्रधान राज्य है । कृषि उत्पादन में विविधता एवं वांछित प्रगुणता के अनुरूप कृषि पर आधारित विविध वर्ग के उद्योगों की उत्पत्ति एवं प्रगति यहां की स्वाभाविक परंपरा रही है । दूसरे शब्दों में, बिहार की औद्योगिक अर्थव्यवस्था की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि कृषि उत्पादन पर आधारित उद्योगों के विकास से संबंधित रही है । स्वभावत: कलात्मक शिल्प तथा कृषि आधारित उद्योगों का बिहार में मौर्य कालीन इतिहास रहा है ।

चीनी उद्योग (Sugar Industry)

कृषि उत्पादन पर आधारित बिहार के उद्योगों में चीनी उद्योग पुराना एवं पारंपरिक उद्योग है । साथ ही चीनी उद्योग कृषि उत्पादन पर आधारित उद्योगों के बीच सर्वाधिक महत्वपूर्ण भी रहा है । उद्योग की संरचनात्मक और क्रियात्मक विशेषताओं का विवरण निम्नलिखित है ।

1. बिहार में चीनी उद्योग की संरचनात्मक विशेषताएं: प्रादेशिक परिप्रेक्ष्य में उद्योगों की संख्या एवं इनके अवस्थितिगत वितरण से औद्योगिक संरचना चिन्हित होती है । बिहार राज्य में चीनी उद्योग की संख्यात्मक संरचना में पश्चिमी चंपारण, पूर्वी चंपारण, गोपालगंज, सिवान, सीतामढ़ी तथा सारण जिलों के साथ-साथ दरभंगा, समस्तीपुर, मुजफ्फरपुर जिलों के अलावा गया, पटना, रोहतास जिलों में अवस्थित चीनी मिलों से पूरी होती थी । 1947 तक भारत के 36 चीनी मिलों में से बिहार में 32 मिलें थीं । बिहार में चीनी मीलों की संख्या 1980-81 में 29 तथा 2002-03 में 10 रह गई । पश्चिमी चंपारण, पूर्वी चंपारण, गोपालगंज, सिवान जिले चीनी उद्योग क्षेत्र का निर्माण करते हैं ।

बिहार के विभिन्न चीनी मिलों का स्थापना वर्ष

सिधवलिया	गोपालगंज	1931
मोतिहारी	पूर्वी चंपारण	1932
सासामुसा	गोपालगंज	1932
रीगा	सीतामढ़ी	1933

लोरिया और मझौलिया	पश्चिमी चंपारण	1933
नरकटियागंज	पश्चिमी चंपारण	1934
हसनपुर	समस्तीपुर	1934
सुगौली	पूर्वी चंपारण	1935
बगहा	पश्चिमी चंपारण	1936
बाराचकिया	पूर्वी चंपारण	1936
चनपटिया	पश्चिमी चंपारण	1937
हरकुआ	गोपालगंज	1938
मढौरा	सारण	1941 इत्यादि है ।

हरिनगर, सीतलपुर, महाराजगंज, नारायणपुर, थावे, हथुआ, मोतीपुर, बक्सर, बिहटा, बिक्रमगंज, गुरारू, गोरौल, रेयाम, लोहट सकरी कुछ चीनी उद्योग के अवस्थिति स्थान का संदर्भ पाते हैं । परंतु वर्तमान में ये चीनी मिल बंद ही मिलते हैं ।

उद्योगों के स्थानिक संरचना के विकास में कुछ निर्दिष्ट कारकों का योगदान रहा है । बिहार राज्य में चीनी उद्योग के आकर्षक विकास की पृष्ठभूमि में जिन कारकों की भूमिका पाई गई है उसमें निम्नलिखित उल्लेखनीय है:

गन्ने की कृषि की अनुकूलता: गन्ना चीनी उद्योग को कच्चा माल प्रदान करता है । स्वभावतः गन्ना उत्पादक क्षेत्रों में चीनी उद्योग की स्थिति अधिक रही हैं । कच्चे माल के रूप में गन्ना वजनह्रास एवं कटाई के बाद में रस की मात्रा में कमी की प्रवृति रखता है । सामान्यता एक टन चीनी उत्पादन के लिए 10 टन गन्ने की जरूरत पड़ती है । यही कारण है कि चीनी उद्योग कच्चे माल की उपलब्धि के अनुरूप अवस्थिति पाता है । पश्चिमी उत्तरी बिहार गन्ने के उत्पादन का प्राकृतिक गृह रहा है । दक्षिण बिहार के पश्चिमी भाग में भी सिंचाई आधारित गन्ने की कृषि होती है ।

(i) **गन्ने की कृषि के लिए अनुकूल परिस्थितिकी:** गन्ना मुख्यतः उष्ण जलवायु की फसल है तथा चूना प्रधान मिटटी इसके लिए उपयुक्त है । मानसूनी जलवायु दशाओं तथा मिट्टी में वांछित चूने के अंश की प्राप्ति चीनी उद्योग अवस्थिति वाले क्षेत्रों में गन्ने की कृषि के लिए सकारात्मक परिस्थितिकी प्रस्तुत करते हैं ।

(ii) **सिंचाई की सुविधा:** गन्ने की कृषि में जल की आवश्यकता अधिक होती है । उत्तरी बिहार तथा दक्षिणी बिहार के चीनी उद्योग अवस्थित भागों में क्रमशः गंडक परियोजना तथा सोन नहर प्रणाली से सिंचाई जल की उपलब्धि होती है ।

(iii) **परिवहन एवं बाजार की अनुकूलता:** बिहार के चीनी उद्योग क्षेत्रों में सघन आबादी विस्तृत बाजार प्रस्तुत करता है तथा अपेक्षाकृत बाढ़ से कम प्रभावित रहने की दशा में उत्तम परिवहन चीनी मिलों तक कच्चे माल को पहुंचाने और औद्योगिक उत्पादन को बाजार या उपभोक्ता तक पहुंचाने की सुविधा को सुलभ बनता है ।

(iv) **किसानों की पारंपरिक रूचि तथा श्रमिकों की अनुकूलता:** नगदी फसल के रूप में गन्ने की कृषि में अनुकूल कृषि पारिस्थितिकी के अनुरूप किसानों की पारंपरिक संलग्नता रही है । साथ ही सघन आबादी वाले गन्ना उत्पादक क्षेत्र में प्रचुर एवं सस्ते श्रमिक उपलब्ध हैं । गन्ने की कृषि की तुलना में चीनी उद्योग अवस्थिति क्षेत्र में अन्य नगदी फसलों की प्रतिस्पर्धा कम है ।

2. क्रियात्मक परिचालन से संबंधित विशेषताएं: औद्योगिक अर्थव्यवस्था का भौतिक परिलक्षण यदि उद्योगों की स्थानिक संरचना के रूप में होता है तो इसका हृदय स्पंदन उद्योगों के क्रियात्मक परिचालन से संबंधित विशेषताओं में अनुभव किया जा सकता है । वास्तव में, उद्योगों का क्रियात्मक परिचालन में ही औद्योगिक अर्थव्यवस्था की अभिव्यक्ति निहित है । उद्योगों का क्रियात्मक परिचालन विविध उत्पादन पारिस्थितिकी की अनुक्रिया में मिलों की अवास्थितिगत संख्या एवं इनसे उत्पादन परिणामों के स्थायित्व तथा निरंतरता, अर्थात समग्र औद्योगिक अर्थव्यवस्था के संचालन से संबंधित होता है ।

बिहार राज्य में चीनी उद्योग का क्रियात्मक परिचालन बहुत उत्साहवर्धक नहीं माना जा सकता है

- चीनी मिलों की उत्पादन इकाइयों की संख्या में लगातार कमी देखी गई है । 1980-81 में 29, 1985-86 में 23, 1990-91 में 28, 1995-96 में 19 तथा 2000-01 में मात्र 10 चीनी मिलों से उत्पादन हो रहा है ।
- 1948 ईस्वी में संपूर्ण भारत की 27.7% चीनी मिल बिहार में थी । चीनी उत्पादन में उत्तर प्रदेश के बाद बिहार दूसरे स्थान पर था । चीनी उद्योग में राष्ट्रीय पूंजी निवेश का 20% बिहार से था और चीनी मिल में कुल श्रमिकों का 29.5% बिहार से जुड़ा था ।
- वर्तमान में चीनी मिलों की संख्या की दृष्टि से बिहार, उत्तर प्रदेश और महाराष्ट्र के बाद आता है । चीनी उत्पादन में बिहार का स्थान सातवां है । संपूर्ण भारत के चीनी मिलों का मात्र 7.5% बिहार के हिस्से में है तथा भारत के कुल चीनी उत्पादन का मात्र 2.03% ही बिहार उत्पन्न करता है ।
- बिहार के अधिकांश चीनी मिलें या तो रुग्णावस्था में है या बंदी के कगार पर हैं ।
- चीनी मिलों की गन्ना पेराई की निम्न क्षमता (प्रतिदिन क्यूबा में 12000 टन गन्ने की तुलना में मात्र 1000 टन) छोटे मिलों में गन्ना कृषकों के फसल की सीमित खपत और चीनी मिलों से संलग्न गौण उत्पादों के समुचित उपयोग में कमी जैसे कारणों से चीनी उत्पादन की लागत में वृद्धि होती है ।
- चीनी मिलों के मशीनरी पुराने हैं तथा वैक्यूम पैन वेस्ट खांडसारी इकाइयों की कमी के कारण उत्पादन क्षमता का अभाव है ।
- दक्षिण भारत के राज्यों की तुलना में बिहार में उगाए गए गन्ने की कोटि निम्न है अर्थात कम रस की प्राप्ति होती है । साथ ही गन्ने की कृषि कार्य की सीमित मौसमी दशा चीनी मिलों से उत्पादन को 4 से 6 महीनों तक ही समर्थन देता है ।

बिहार राज्य में चीनी उद्योगों का क्रियात्मक परिचालन प्रत्यक्षतः कमजोर अवस्था में है । बिहार राज्य के उन चीनी मिलो जो वर्तमान में उत्पादनरत्त हैं, का विवरण निम्नलिखित है:

बिहार में चीनी मिलों का वर्तमान उत्पादन

उत्पादनरत चीनी मिल	गन्ना पेराई क्षमता	पेरी गई गन्ना की मात्रा	चीनी उत्पादन की मात्रा	प्रतिशत प्राप्ति
1. बगहा	2,500	17.62	1.60	9.41
2. हरिनगर	7,000	89.19	8.77	8.70
3. नरकटियागंज	5,000	58.66	5.51	9.39
4. मझौलिया	3,500	37.15	3.12	8.39
5. मोतिहारी	2,500	6.05	0.40	7.72
6. सासामुसा	2,200	23.77	2.17	9.11
7. गोपालगंज	5,000	47.80	3.18	9.30
8. सिधवलिया	2,250	26.00	2.39	9.19
9. रीगा	3,500	34.79	3.17	9.11
10. हसनपुर	1,750	16.77	1.55	9.27
योग	**35,200**	**357.08**	**33.06**	**9.26**

स्रोत — राज्य सरकार का वार्षिक प्रतिवेदन, 2002-03 ।

चीनी उद्योग बिहार का अग्रणी औद्योगिक आधार है । बिहार को भारत में प्रथम चीनी मिल की स्थापना का गौरव प्राप्त है जबकि डच कंपनी के द्वारा बेतिया में चीनी मिल की स्थापना की गई । समकालीन रुग्णोंन्मुख चीनी उद्योग के संबंध में क्रियात्मक परिचालन प्रक्रिया के प्रबंधन को आवश्यकता है । आखिरकार उत्तर बिहार के तिरहुत क्षेत्र को चीनी का कटोरा (Sugar Bowl) कहा जाता है ।

- सन्दर्भ: बिहार की भौगोलिक समीक्षा, वसुन्धरा प्रकाशन, डॉ नंदेश्वर शर्मा